Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 1–16

गुप्त शासको के समकालीन शक्ति सम्प्रदाय का अध्ययन

Arvind Kumar Singh [1], Shagufta Parveen [2]

[1] Research Scholar, Department of History, Mangalayatan University, Aligarh
[2] Research Director, Department of History, Mangalayatan University, Aligarh

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.2228

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

गुप्त काल के समय से भी पूर्व हिन्दू धर्म में शक्ति देवी की पूजा अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित रही है। शक्ति को नारी रूप में अभिव्यक्ति किया गया है, जिसके दिव्य स्वरूप को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है। शक्ति का प्रारम्भिक रूप, शिव की पत्नी उमा अथवा पार्वती है, जो जगजननी कही गयी हैं। वस्तुतः उनका तान्त्रिक और दार्शनिक विकास शक्ति के रूप में हुआ है। शक्ति के रूप में विकसित होकर पार्वती, कपिलावरण काली, और सिंह वाहिनी दुर्गा बन गयी, कालान्तर में जिन्होंने असीमित शक्ति से सम्पन्न 'महाकाली' का रूप ग्रहण किया। यहाँ यह स्मरणीय है कि शिव भी महाकाल कहे जाते हैं। अतः शक्ति एवं शिव की एकात्मकता स्वयं सिद्ध है। वस्तुतः हिन्दू धर्म में विष्णु और शिव के अतिरिक्त किसी देवता की महिमा और गरिमा चरम सीमा पर पहुँची, तो वह केवल शक्ति दुर्गा की। शक्ति की पूजा और उपासना करने के कारण इसके धर्मावलम्बी 'शाक्त' कहे गये। धीरे–धीरे शक्ति के साथ अनके नाम जुड गये, जो उनके विकसित होने वाले क्रमिक रूपों के परिचायक रहे हैं।

Keywords: काली, चामुण्डा, देवी, शिवानी, रूद्राणी, भवानी, शक्ति देवी, लक्ष्मी, वैष्णवी, ब्राह्मी, इन्द्राणी आदि

प्रस्तावना

अन्य हिन्दू देवताओं की तरह ही शक्ति देवी का रूप भी प्रागैतिहासिक काल से ही दिखाई देने लगता है। जो सिन्धु सभ्यता की मातृदेवी शक्ति पूजा की ओर दिखाई देती है। उमा, पार्वती, अम्बिका, हेमवती, रूद्राणी और भवानी जैसे नाम आदि, शक्ति के रूप में वैदिक साहित्य में भी मिलते हैं। ऋग्वेद को दशम् मण्डल में एक पूरी सूक्ति ही शक्ति की उपासना से सम्बन्धित है। इसमें 'वाक्' शक्ति का उल्लेख हुआ है। उस वाक्शक्ति का कथन है कि मैं ही ब्रह्म के द्वेषियों को मारने के लिए रूद्र का धनुष चढ़ाती हूँ। मै ही सेनाओं को मैदान में ला खड़ी करती हूँ। मैं ही आकाश और पृथ्वी पर सर्वत्र व्याप्त हूँ निश्चय ही यह कथन शक्ति की महत्ता और तेजस्विता को व्यक्त करता हुआ दिखाई देता है। वह अन्यत्र कहती हैं, कि मैं सम्पूर्ण जगत् की अधीश्वरी हूँ। अपने उपासकों को धन की प्राप्ति कराने वाली, साक्षात् कराने योग्य परब्रह्म को अपने से अभिन्न रूप में जानने वाली तथा पूज्यनीय देवतओं में प्रधान हूँ। सम्पूर्ण भूतों में मेरा प्रवेश है। अनेक स्थानों में रहने वाले देवता जहाँ कहीं जो कुछ भी करते हैं, वह सब मेरे लिए करते हैं। इससे पूर्ण स्पष्ट है कि देवी अद्वैत रूप में व्याप्त है। जगत के उद्भव पालन और संहार की जो कथा देवी से सम्बद्ध की गयी, उसका सूत्र ऋग्वेद में ही है। 'अम्बिका' के रूप में देवी का उल्लेख वाजसनेयी संहिता में भी हुआ है, जहाँ उन्हें रूद्र की बहन बताया गया है। तैत्तिरीय एवं शतपथ ब्राह्मणों में भी अम्बिका को रूद्र बहन कहा गया है। वैसे, तैत्तिरीय आरण्यक में रूद्र की पत्नी पार्वती' का सन्दर्भ मिलता है। 'उमा' शब्द का उल्लेख किस उपनिषद् में हुआ है, इन्हें 'विद्यादेवी' का रूप मानते हुए हेमवती कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस प्रकार प्रारम्भ में शिव की प्रधानता दस्यु किरात, निषाद जैसी आदिम

जातियों में अधिक हुई, ठीक उसी प्रकार शक्ति की प्रधानता भी आदिम् जातियों और पर्वतीय निवासियों में तीव्रता पूर्वक हुई। इस प्रकार प्रकृति की शक्ति को महत्व प्रदान करके माया के रूप में 'नित्याशक्ति' की अभिव्यंजना की गयी है। 'माया' को प्रज्ञा और स्वप्न दोनों माना गया इसलिए देवी शक्ति 'वाग्देवी' सरस्वती भी हुई और स्वप्नमयी मोहिनी रात्रि भी।[1]

सर आर.जी. भण्डारकर का मत है कि आरम्भ से गृह्यसूत्रों तक कहीं भी शक्ति सम्पन्न किसी देवी का उल्लेख नहीं मिलता। यद्यपि रूद्राणी और भवानी जैसे कुछ नाम मिलते हैं, इनसे किसी शक्ति सम्पन्न देवी के अस्तित्व का ज्ञान नहीं होता। उमा भी एक देव की पत्नी ही हैं और प्रभाव में अपने पति से ऊपर नहीं हैं। किन्तु महाभारत में कृष्ण के परामर्श पर अर्जुन दुर्गा की स्तुति करते हैं और भावी युद्ध में विजय के लिए उनसे प्रार्थना करते हैं। यह स्रोत ही यह प्रदर्शित करता है कि जब इसकी रचना की गयी थी, उस समय के पहले ही दुर्गा शक्ति सम्पन्न देवी हो चुकी थी और लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उनकी आराधना करने लगे थे। जिन नामों द्वारा उनकी स्तुति की गयी है, वह निम्नलिखित है कुमारी, काली, कपाली, महाकाली, चण्डी, कात्यायनी, कराला, विजया उमा कौशिकी, कान्तारवासिनी। उस स्तुति के एक श्लोक में कहा गया है कि जो व्यक्ति प्रातःकाल शक्ति का स्रोत पढ़ता है, वह संग्राम में विजयी होता है तथा उसे लक्ष्मी की एकान्तिक प्राप्ति होती है। विराट पर्व में युधिष्ठिर ने भी देवी की स्तुति की है जिसमें उन्होंने देवी को महिशासुरमर्दिनी, यशोदा के गर्भ से जन्म लेने वाली, विंध्याचल निवासिनी नारायण की परम प्रिया और वासुदेव की भगिनी कहा है। कालकाली, महाकाली को मदिरा, मांस और पशु में रूचि रखने वाली भी दर्शित किया गया है। विन्ध्यक्षेत्र को उनका शाश्वत स्थान बताया गया है तथा घंटा, वाश, धनुष, चक्र आदि उनके विविध अस्त्र उलेखित किये गये हैं। देवी शक्ति द्वारा विंध्यपर्वत पर अपना शाश्वत स्थान बनाने के पहले की कथा महाभारत में स्तुति के सन्दर्भ में दी गयी है, जिसमें यह कहा गया है कि देवी का जन्म नन्दगोप के वंश में यशोदा के गर्भ से हुआ था। जब कंस ने कन्या के रूप में उन्हें शिला पर प्रक्षिप्त किया, उस समय वह आकाश मार्ग में चली गई और विन्ध्यपर्वत पर जा बसीं।

गुप्तकाल में देवताओं की उपासना के साथ साथ इस काल में देवी शक्ति की उपासना का यत्र तत्र उल्लेख मिलता है। इस काल में सम्भवतः देवी के दो प्रकार माने गये हैं। प्रथम देवी शक्ति तथा द्वितीय विष्णु और शिव की अर्धांगिनी के रूप मे। इस काल की साहित्यिक रचनाओं, विशेषकर पुराणों में देवी की महिमा एवं गरिमा का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। पुराणों में उन्हें, शक्ति, ज्ञान और मोह को उद्भूत करने वाली क्रिया शक्ति सर्जन अथवा सृष्टि शक्ति से सम्बन्धित हुई। जगजननी के रूप में वही अपनी प्रभा से तीनों लोकों को प्रकाशित करने लगी, दुर्गा अथवा महाकाली के रूप में तमस रूपी असुरों का संहार करने लगी, योग निद्रा के रूप में वह समस्त प्राणियों को निद्रा के वशीभूत करने लगी, प्रसन्न होने पर वह सभी कामनाओं को पूरा करने लगी तथा भद्रकाली के रूप में अपनी स्तुति होने पर मनुष्य को कभी पराजित नहीं होने देती थीं। इस प्रकार देवी की शक्ति निरन्तर बढ़ती गयी और उसका प्रभाव व्यापक होता गया। महाभारत के विराट पर्व की ही तरह देवी के उत्पन्न होने तथा उनके विविध रूपों की कथा पुराणों में भी दी गयी है। हरिवंश पुराण के अनुसार विष्णु ने पाताल लोक में जाकर कालरूपिणी योगनिद्रा से यशोदा की पुत्री के रूप में जन्म लेने के लिए आग्रह किया। जन्म लेने के उपरान्त वे कंस द्वारा शिला पर पटकी गयीं तथा आकाशगामी होकर उन्होंने विन्ध्यपर्वत पर शाश्वत रूप में स्थान ग्रहण किया। कुश गोत्र की होने के कारण वे कौशिकी भी कही गयी। शुंभ–निशुंभ जैसे असुरों का भी उन्होंने संहार किया। कालान्तर में सुरा मांस और बलि से उनकी पूजा की जाने लगी। इसी प्रकार की कथा विष्णु पुराण में दी गयी है तथा निद्रा को यशोदा के गर्भ से उत्पन्न देवी के रूप में विवृत किया गया है। उत्पन्न होने पर कंस ने उन्हें शिला पर पटकना चाहा पर वे उसके हाथ से छूटकर आकाश में स्थित हो गयीं।

मार्कण्डेय पुराण में शक्ति की व्यापकता और महत्ता अधिक है। उसमें शक्ति के तीन रूपों, महाकाली, महालक्ष्मी, और महासरस्वती का वर्णन है। उक्त पुराण में देवी को ही समस्त प्राणियों में शक्ति, दया, शान्ति, तुष्टि, वृद्धि और माता के रूप में अवस्थित बताया गया है। इसी पुराण में यह भी कहा गया है कि सभी जीव महामाया के प्रभाव से वासना रूपी भ्रमर से युक्त मोह रूपी गर्त में पतित होते हैं। जगदीश्वर श्री विष्णु की योग निद्रा स्वरूपिणी महामाया ही इस विश्व को विमोहित करती हैं। वह महामाया ज्ञानियों के चित्त का बलपूर्वक आकर्षण करके मोह में गिराती है। अतः उसमें आगे कहा गया है कि वह योगनिद्रा महामाया नित्य हैं, जो समस्त जगत में व्याप्त है तथा जो अनेक प्रकार से उत्पन्न हुईं। जब देवताओं के कार्य सिद्ध करने के लिए उनका आविर्भाव होता है तब उन नित्य रूपा देवी को संसार में उत्पन्न हुई कहा जाता है। मार्कण्डेय पुराण में ही देवी दुर्गा से सम्बन्धित 'दुर्गाशप्तशती' नामक अंश है, जो अत्यन्त सहनीय और प्रखण्ड है। नवरात्र काल में देवी की आराधना में दुर्गा शप्तशती का ही पाठ किया जाता है ओर मनोवांछित फल की कामना की जाती है।[2]

उक्त पुराण में कहा गया है कि महिषासुर को मारने के लिए विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, वरूण, सूर्य आदि विभिन्न देवताओं के मुख से निकले हुए तेज से 'शक्ति' का उद्भव हुआ, जो महिषासुरमर्दिनी के रूप में प्रख्यात हुईं। उस देवी को विभिन्न देवतओं ने अपने अपने अस्त्र प्रदान किये जिनका उन्होंने असुरों का विनाश करने में उपयोग किया था। देवी की उत्पत्ति से सम्बन्धित एक और

कथा मार्कण्डेय पुराण में विवृत है, जिसके अनुसार शुंभ – निशुंभ जैसे असुरों के आतंक से त्रस्त होकर देवगण हिमालय पर जाकर देवी की स्तुति कर रहे थे। उसी समय भगवती पार्वती गंगा स्नान करने के लिए जा रही थी। अतः उन्होंने देवगणों से स्तुति के विषय में पूछा। तभी उनके शरीर के कोष से देवी शिवा अम्बिका का उदय हुआ, जिन्होंने अपने को वही देवी बतलाया जिनके लिए देवतागण स्तुति कर रहे थे। कोष से उत्पन्न होने के कारण वह देवी 'कौशिकी' कही गयीं। पार्वती के शरीर से अम्बिका के निकलने के कारण उनका शरीर कृष्ण हो गया जिसके कारण उन्हें 'काली' की भी संज्ञा दी गयी। जब वह असुरों का संहार करने के लिए गईं तो उनका ललाट क्रोध से कृष्ण वर्ण का हो गया था और चण्ड मुण्ड को मारने के लिए उनके शरीर से कराल मुखी काली निकली थीं। इसीलिए अम्बिका ने उसका नाम चामुण्डा रखा। ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, और एन्द्री यह सात शक्तियाँ उनकी विभूति कही गयीं हैं। इसके बाद वह अपने अन्य स्वरूपों का वर्णन करतीं हैं, जिन्हें वह अन्य अवसर पर ग्रहण करेगीं जैसी नन्दसुता, शाकम्भरी, भीमा, भ्रामरी आदि।[3]

वायु पुराण में उल्लिखित है कि उमा के क्रोध से भद्रकाली उद्भूत हुई थी। मत्स्य पुराण के वर्णन के अनुसार देवताओं के कार्य सम्पन्न करने के निमित्त उमा के शरीर से देवी की उत्पत्ति हुई थी। अत इन वर्णनों से स्पष्टतः कहा जा सकता है कि शक्ति देवी, शिव की पत्नी थी तथा शिव और शक्ति में अभिन्नता थी। वस्तुतः शक्ति का परिवार शिव के परिवार में समाहित हो गया तथा शिव का परिवार उन्नत होकर व्यापक हो गया था। सप्तमातृका के रूप में शक्ति का विकास हुआ जिनमें ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और यमी या चामुण्डा उनके सात स्वरूप माने गये। कुषाण कालीन स्थापत्य कला में सप्त मातृकाओं के चित्र मिलते हैं। गुप्तकालीन कोषकार अमरसिंह ने सप्त मातृका की चर्चा की है। कालिदास ने कुमार सम्भव में इन्हें मातरः कहा है। स्कन्दगुप्त के बिहार स्तम्भ लेख में भी इसका उल्लेख है। देवी शक्ति के व्यापक विस्तार में देवी के अनेक रूप समाविष्ट हो गये तथा सभी देवियाँ एक देवी के साथ अभिन्न हो गयीं। सर्व प्रथम हमें उमा मिलती हैं, जो रक्षा करने वाली देवी हैं तथा शिव की पत्नी हैं। तदुपरान्त हम हेमवती एवं पार्वती नाम पाते हैं जिससे देवी का और विस्तार हुआ। हिमालय की पुत्री और पर्वत प्रदेश से सम्बद्ध होने के कारण देवी की पूजा पर्वतीय प्रदेशों में तीव्रता से फैली। इसके साथ ही पुलिन्द, शबर, बर्बर जैसी जंगली जातियों की भी आराध्या देवी बनी, जिन्हें सुरा, मांस, बलि आदि का नैवेद्य प्रदान किया जाता था। उनके प्रारम्भिक नामों में काली और कराली नाम भी थे जो अग्नि की सात जिह्वाओं में थी। प्राचीन काल में रूद्र का अग्नि के साथ एकीकरण हुआ था। अग्नि की सात जिह्वायें मानी जाती थी, जिनमें दो काली और कराली कहलाती थी। जो शक्ति और शिव के सामंजस्य का परिचायक है। रूद्र शिव भी आदिम जातियों के देवता थे परन्तु परवर्ती काल में उनकी पत्नी शिवा 'शक्ति' अपना विस्तार करके आदिवासियों, आदिम जातियों, जंगली जाति तथा अन्य लोगों में अपना प्रभाव बढ़ा लिया। मनुष्य की अन्तस्वृत्तियाँ शक्ति की ही रूप मानी गयीं, जिसमें इच्छा, क्रिया, सर्जन, मोह, विनाश आदि सभी सम्मिलित हैं। अतः शक्ति के तीन प्रधान रूप माने गयें है।[4]

(1) सौम्य या शान्त रूप – उमा, पार्वती, लक्ष्मी आदि। जिसकी सामान्यतः उपासना की जाती थी।
(2) उग्र या प्रचण्ड रूप दुर्गा, चण्डी, कापाली, भैरवी आदि। जिसकी उपासना 'कापालिक' और कालामुख' जैसे घोरपन्थी सम्प्रदाय के लोग करते थे।
(3) काम प्रधान रूप – आनन्द भैरवी, त्रिपुर सुन्दरी, ललिता आदि। जिसकी उपासना लोग करते थे। जो देवी के 'मोह' और माया को समस्त जगत से ऊपर मानते हैं।

गुप्त काल के अभिलेखों तथा सिक्कों में भी यत्र – तत्र देवी शक्ति की उपासना से सम्बन्धित साक्ष्य प्राप्त होते हैं। चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय के 401 से 402 ई. वाले उदयगिरि गुहाभिलेख में किसी सनकानिक वंश के सामन्त द्वारा एक धार्मिक उपहार का समर्पण आलेखित है चूँकि यह अभिलेख दो शिल्पकृतियों पर उत्कीर्ण हैं जिनमें से एक विष्णु की चतुर्भुजी प्रतिमा है और दूसरी किसी बारह भुजाओं वाली देवी की।[5] यह देवी सम्भवतः लक्ष्मी या अपने योग माया रूप में दुर्गा हैं। इस मूर्ति के साथ ही साथ सप्त – मातृका चंडिका या चामुण्डी, माहेश्वरी ब्राह्मणी, कौमारी, वाराही, नारसिंही, तथा वैष्णवी की मूर्तियाँ मिली हैं। इस काल में दुर्गा या विष्णु के साथ जुड़े उनके विभिन्न रूपों की उपासना भी कोई अनहोनी बात नहीं हैं। इस प्रकार के सम्मिलित उपासना के प्रमाण अधिकांशतः मध्य भारत के विन्ध्य क्षेत्र में प्राप्त अभिलेखों में मिलते हैं, जहाँ जनजातीय मातृदेवियों की उपासना काफी प्रचलित थी। मध्य भारत के पूर्ववर्ती झालावाड़ राज्य के गंगधर गाँव के निकट पाये गये 423 ई. के एक प्रस्तर अभिलेख में कहा गया है कि राजा विश्ववर्मन के सामन्त मयूराक्षक ने दो मन्दिर एक विष्णु के लिए और दूसरा देवी मातृकाओं के लिए बनवाये थे। इन अभिलेखों में पार्वती को शिव की पत्नी और अर्धांगिनी कहने के साथ – साथ गौरी नंदेश्वरी देवी और उमा आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। इसके अतिरिक्त कात्यायनी दुर्गा, अम्बिका और भवानी आदि नाम भी पार्वती के लिए प्रचलित थे। चन्द्रगुप्त प्रथम की मुद्रा पर पृष्ठ भाग पर एक सिंह वाहिनी देवी का चित्र अंकित है और ऊपर लिच्छवयः लेख प्राप्त होता है। अल्तेकर महोदय के अनुसार यह दुर्गा का अंकन है तथा वह सम्भवतः लिच्छवियों की इष्ट देवी थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिंह निहन्ता प्रकार के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर सिंह वाहिनी देवी का अंकन हुआ है। इस देवी की पहचान के विषय में विद्वानों में मतभेद है। सामान्यतः इसकी पहचान लक्ष्मी अथवा अम्बिका से की जाती है। समुद्रगुप्त के दण्डधारी और परशु प्रकार तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय के दण्डधारी प्रकार के

सिक्कों पर लक्ष्मी, सिंहासन पर आसीन, साड़ी, चोली, हार, तथा मोती की लड़ी की माला पहने अंकित किया गया है। दण्डधारी प्रकार के समुद्रगुप्त के सिक्कों पर बाँयें हाथ में कार्नुकोपिया तथा दांयें में पाश है और गोलाकार चटाई पर पैर रखे हैं।[6] परशुधारी प्रकार कुछ सिक्कों पर देवी के बाँयें हाथ में कमल की कली और दाहिने हाथ में पाश एवं कमलासन पर पैर प्रदर्शित किये गये हैं। चन्द्रगुप्त द्वितीय के ध्वजधारी प्रकार के सिक्कों के पृष्ठभाग पर प्रभामण्डल युक्त देवी सम्मुख बैठी हैं, दांये हाथ में पाश एवं बाँयें में कार्नुकोपिया है जो जंघे पर स्थित है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी कमलासन पर बैठी हैं, दाहिने हाथ में पाश एवं बाँयें हाथ में कमल हैं। कुमार गुप्त प्रथम के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों के पृष्ठभाग पर लक्ष्मी कमल पर बैठी हैं, दाहिने हाथ में पाश तथा बाँयें में कमल है। स्कन्दगुप्त के सिक्कों पर भी देवी लक्ष्मी के कुछ रोचक अंकन प्राप्त होते हैं। धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों के पृष्ठभाग पर कमलासीन लक्ष्मी, प्रभामण्डल युक्त, दाहिने हाथ में पाश, बाँयें में कमल, जाँघ पर अवलम्बित अंकित है।[7]

समुद्रगुप्त के वीणा वादक प्रकार के सिक्कों के पृष्ठभाग पर द्विभुजा तथा प्रभामण्डल युक्त देवी मोढ़े पर आसीन है। देवी साड़ी, कंचुकी, चादर, हार, कुण्डल भुजबन्द कंकण पहने, बाँयें हाथ में कार्नुकोपिया, दाहिने में पाश धारण किये अंकित है। वह केशबन्ध अथवा कुन्तल मुकुट भी धारण किये हैं। सी.डी. चटर्जी महोदय ने देवी की पहचान एकानंशा से की है, जिसे भद्रा या सुभद्रा नाम से भी जाना जाता है। वह एक वैष्णव देवी है तथा मिथकों में उसे कृष्ण तथा बलदेव की बहन कहा गया है। स्कन्दपुराण के अनुसार, वह शक्ति का ही एक रूप है। कृष्ण तथा बलदेव की बहन होने के कारण तथा उनकी रक्षा के लिए संसार में अवतरित हुई थी। यद्यपि मूलतः वैष्णव देवी होते हुए भी एकानंशा वैष्णव तथा शाक्त सम्प्रदाय के मध्य एक सेतु का कार्य करती है इसके अतिरिक्त सर्वशक्ति सम्पन्न मातृदेवी का एक रूप होने के कारण उसकी शक्ति अपने दोनों भाइयों से कम नहीं थीं। चटर्जी महोदय का पुनः आग्रह है कि कुमार गुप्त के अश्वमेध प्रकार के सिक्कों पर भी इसी देवी को प्रदर्शित किया गया है। कुमार गुप्त प्रथम के वीणावादक प्रकार के सिक्कों पर अंकित देवी की पहचान सरस्वती से की गयी है। इस नरेश के सिक्कों पर अंकित देवी दाहिने हाथ में लम्बी नाल वाला कमल धारण किये हैं जबकि बाँयें हाथ नीचे लटक रहा है। उसका बाँया हाथ जाली है, जो सिंहासन के किनारे, जिस पर देवी आसीन हैं, अवलम्बित है। पूर्वकारणागम के अनुसार, यदि देवी के दाहिने हाथ में कमल है और बांया हाथ खाली लटक रहा है, तो उसकी पहचान भवानी अथवा सरस्वती से होनी चाहिए। यही प्रतिमा वैज्ञानिक विशेषताएं गौरी के लिए सुप्रभेदागम में प्राप्त होती है। कुमार गुप्त प्रथम के वीणा वादक प्रकार के सिक्कों पर अंकित देवी की पहचान सरस्वती से की जा सकती है, परन्तु चटर्जी ने उसका तादात्म्य शिव की भार्या होने पर बल दिया है, जिसे भवानी अथवा गौरी भी कहा जाता है।[8]

कुमार गुप्त प्रथम के अश्वारोही प्रकार के सिक्के के एक वर्ग पर मोढ़े पर बैठी देवी, कमर पर अवलम्बित बाँयें हाथ में लम्बा नाल युक्त कमल, दाहिनें हाथ से मोर को फल (अंगूर) खिला रही है। एक सुझाव दिया गया है कि यह प्रकार कार्तिकेय का वाहन मयूर प्रदर्शित है। आर.के. मुखर्जी ने इसकी पहचान देवी दुर्गा से की है, जो अपने वाहन मयूर को खिला रही हैं। इसकी पुष्टि, उनके अनुसार, मार्कण्डेय पुराण के श्री चण्डी खण्ड से होती है। इसके अनुसार, कौमारी–अम्बिका को 'मयूरवर वाहना' तथा गुहरूपिणी बताया गया है।[9] परन्तु एक अन्य श्लोक (11.15) को मयूरों द्वारा घिरी देवी को नारायणी कहा गया है। स्कन्दगुप्त के बिहार शिलालेख में सप्तमातृ देवी का नाम है, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कुमारी, वैष्णवी, माहेन्द्री, वाराही, चण्डी तथा चामुण्ड थी। यह कार्तिकेय की सात माँ के रूप में थी जो कालान्तर में आठ या नौ हो गयी। इसी लेख में देवियों के अनेक मन्दिरों का भी वर्णन है मन्दसोर से 491ई. का प्राप्त अभिलेख जो महाराज गौरी का है, जो डी.सी. सरकार के अनुसार औलिकर वंश के राजा आदित्यवर्धन के सामन्त के द्वारा भगवती देवी के एक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। मध्य प्रदेश में स्थित खोह से महाराज सर्वनाथ के एक ताम्रपत्राभिलेख में धवशण्डिका नामक गाँव का अनुदान चौडगोमिक तथा उसके उत्तराधिकारियों को पिष्टपुरिका देवी की पूजा तथा मन्दिर की मरम्मत आदि का खर्च चलाने के लिए दिए जाने का उल्लेख है। चूँकि वही गाँव महाराज जयनाथ के द्वारा पहले विष्णु मन्दिर के लिए दिया गया था, इस आधार पर फ्लीट ने अनुमान लगाया है कि पिष्टपुरिका देवी लक्ष्मी का ही एक रूप होगी।[10]

बुद्ध गुप्त के दामोदर ताम्रपत्र में कोकामुख स्वामिन् का उल्लेख है। इस कोकामुख स्वामिन की समानता देवी दुर्गा से भी की गयी है। महाभारत में भी अर्जुन द्वारा दुर्गा के लिए कोकामुख ही कहा गया है। पं. नीलकठ शास्त्री ने इसका विश्लेषण किया है समर्थन बसाढ़ से प्राप्त मुहर पर अनन्त शिव को नन्देश्वरी दुर्गा का वांछित पति कहा गया है।[11]

निष्कर्ष

हिन्दू धर्म अन्य देवताओं की तुलना में देवी शक्ति की सत्ता प्रभावशाली आधार पर स्थापित हुई तथा उनका वैभव एवं ऐश्वर्य धीरे – धीरे अत्यन्त शक्तिशाली होने लगा। फलतः मधुकैटभ, महिशासुर, शुंभ, निशुंभ, चंड –मुंड, रक्त बीज जैसे भयंकर आसुरों का

विनाश करके वह देव परिवारों में सर्वश्रेष्ठ हो गयी, क्योंकि उन अत्याचारी असुरों का वध कर डालने का बल, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र आदि बलशाली देवताओं के पास भी नहीं था। अतः देवी शक्ति का स्वतन्त्र अस्तित्व सम्मुख आया जो अत्यन्त व्यापक और अपार ऐश्वर्य युक्त था। अपने पति शिव से पृथक करके काली अथवा दुर्गा के रूप में उनकी स्वतन्त्र उपासना प्रारम्भ हो गयी। इसके साथ 'अर्धनारीश्वर' के रूप में शक्ति और शिव दोनों की स्थितियाँ संयुक्त हुई तथा शिव और शक्ति दोनों सम्प्रदायों का पारस्परिक एकीकरण भी हुआ। शक्ति के लिए देवी भागवत में कहा गया है कि उनके अखिल प्रभाव को न तो ब्रह्मा, न हरि, न शिव और न अनन्त शेषनाग जानते हैं। यह सब भी उनके अंश के अंश हैं। फिर अन्य देवियों के विषय में क्या कहा जाय। उनके पद चिन्ह पर चलकर ब्रह्मा विश्व का सर्जन करते हैं, विष्णु सर्वदा पालन करते हैं, और रूद्र संहार करते हैं। उनकी कृपा के बिना यह देवता भी असमर्थ हैं। उन जगदम्बिका के लिए हमारा नमस्कार है। देवी को वेदान्त प्रतिपाद्य ब्रह्म से अभिन्न अथवा तद्रूपनिर्दिष्ट किया गया है, वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश उस पराशक्ति देवी का, जिसको ब्रह्म कहते हैं, जो परमात्मा रूप है उसकी नित्य और सनातन मानकर, सदा मन में ध्यान करते हैं। आगे कहा गया है, जो दैवी शक्ति है, वही परमात्मा है, जो परमात्मा है, वही देवी है। इन दोनों में किंचित मात्र भी अन्तर नहीं। इस प्रकार देवी ही ब्रह्मरूपिणी, परमात्मा और शक्ति सम्पन्न मानी गईं। और इसका अत्याधिक प्रभाव अब तक के समाज पर रहता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None

ACKNOWLEDGMENTS

None

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कलियुगराजवृत्तान्त ऐंड दी इम्पीरियल गुप्ताज : जगन्नाथ, ज.वि.रि. सो. पृष्ठ 31
काच प्रॉब्लम : दासगुप्त, ए.एन., इं.हि. क्वा., पृष्ठ 20
काच प्रॉब्लम–ए रीइक्जामिनेशनः भट्टाचार्य, एस., अ.इं.हि., पृष्ठ 45.
काचगुप्त ऐंड रामगुप्त : हेरास, एच., ज.वि.उ.रि.सो., पृष्ठ 34
कांच ए स्टेप ब्रदर ऑफ रामगुप्त : गुत्त, परमेश्वरी लाल, ज.न्यू.सो.इं., पृष्ठ 5
कांच प्रॉब्लम साल्व्ड : गुप्त, परमेश्वरी लाल, इं.हि.क्वा., पृष्ठ 22
कालिदासेज कुन्तलेश्वरदौत्यम्ः राघवन, वे.जि.च. लहा वाल्यूम, पृष्ठ 2.
क्रोनोलॉजी ऑफ दी लेट इम्पीरियल गुप्ताज : बनर्जी, राखल दास, ए.भं. ओ.रि.इं, पृष्ठ 1
गया ऐंड नालन्दा प्लेट्स ऑफ समुद्रगुप्त : मजूमदार, र. चं, इं. क., पृष्ठ 11
गुप्ता एरा : सेन गुप्ता, पी.सी., ज.रॉ.ए.सो. बं., पृष्ठ 8
गुप्ता रूल इन उड़ीसा : सरकार, दिनेशचन्द्र, इं.हि.क्वा., पृष्ठ 26